साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार 10 -16 अक्टूबर 2022, वर्ष-8, अंक-27

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

हड़कंपः खबर प्रकाशन के बाद जागे जिम्मेदारों ने दिखाई सख्ती, अब 250 करोड़ रुपए के भ्रष्टाचार की होग जांच

मंत्री गोपाल भार्गव ने तलब की रेशम घोटाले की फाइल

भोपाल। जागत गांव हमार

नर्मदापुरम जिले में पिछले 15 साल में हुए अलग-अलग रेशम घोटाले की जांच शुरू होगी। कुटीर एवं ग्रामोद्योग मंत्री गोपाल भार्गव ने घोटाले से संबंधित सभी फाइलें मंगा ली हैं। उम्मीद की जाती है कि जल्द ही जांच के आदेश होंगे। गौरतलब है कि **'जागत गांव हमार'** ने अपने पिछले अंक में **'रेशम उत्पादन में लगा भ्रष्टाचार का कीड़ा'** शीर्षक से प्रमुखता के साथ खबर प्रकाशित की थी। खबर प्रकाशित किए जाने के बाद मंत्री ने इस गड़बड़ी को गंभीरता से लिया है। उन्होंने शुरू से लेकर अब तक हुई विभागीय जांच और दूसरी जांच एजेंसियों में की गई शिकायतों की भी जानकारी तलब की है। इसके अलावा लोकायुक्त पुलिस संगठन ने रेशम विभाग के अधिकारियों से जल्द दस्तावेज उपलब्ध कराने को कहा है।

घोटालाः नर्मदापुरम जिले में सात साल में खा गए ढाई सौ करोड़ रुपए

रेशम उत्पादन में लगा भ्रष्टाचार का 'कीड़ा'

» रेशम आयुक्त ने पिछले हफ्ते दो कर्मचारियों को निलंबित किया

» बड़े अधिकारियों पर आंच नहीं आई जिनका काम निगरानी का था

250 करोड़ का भ्रष्टाचार

गौरतलब है कि तीन अलग-अलग मामलों में 250 करोड़ रुपए से ज्यादा का भ्रष्टाचार हुआ है। इसके बाद भी कार्रवाई के नाम पर तृतीय श्रेणी के दो कर्मचारियों को निलंबित किया गया है। गड़बड़ी के समय पदस्थ रहे अधिकारी और कुछ कर्मचारी जिनका नाम घोटाले में सामने आ रहा था उनमें नौ सेवानिवृत्त हो चुके हैं। 2015 में लोकायुक्त में शिकायत पहुंची थी, लेकिन जांच अधूरी होने की वजह से आज तक प्रकरण पंजीबद्ध नहीं किया गया है।

हड़प ली किसानों की सब्सिडी

आर्थिक अपराध प्रकोष्ठ में भी अकबर अहमद नामक किसान ने शिकायत की थी, पर यह जांच भी पूरी नहीं हो पाई। किसानों की ज्यादा संख्या और ककून का अधिक उत्पादन दिखाकर अनुदान की राशि अपनी जेब में डालने, परिवार के लोगों को ककून उत्पादन की योजना में फायदा पहुंचाने, ककून बनाने के लिए घरों के निर्माण में गड़बड़ी की शिकायतें कर्मचारी-अधिकारियों के खिलाफ हुई है।

मैंने पूरे मामले की फाइल मंगाई है। इसकी जांच कराएंगे। जो भी दोषी साबित होगा उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। -गोपाल भार्गव- मंत्री, कुटीर एवं ग्रामोद्योग

शिवराज बोले-हम आने वाली पीढ़ी के लिए धरती को सुरक्षित स्वरूप में छोड़ पाएंगे

प्रदेश में कृषि पाठ्यक्रम में जुड़ेगी प्राकृतिक खेती

मध्यप्रदेश में प्राकृतिक खेती अब तक से 59 हजार से अधिक किसान जुड़े

भोपाल। जागत गांव हमार

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्राकृतिक खेती और डिजिटल कृषि के अभियान को मिशन मोड में लेने के लिए उनका आभार। इस पवित्र लक्ष्य से हम आने वाली पीढ़ियों के लिए धरती को सुरक्षित स्वरूप में छोड़ पाएंगे। इन अभियानों से मानव जीवन के साथ जीव-जन्तुओं की सुरक्षा की व्यवस्था भी होगी। मध्यप्रदेश में प्राकृतिक खेती की दिशा में 2021 से कार्य आरंभ हुआ और अब तक 59 हजार से अधिक किसान इस अभियान से जुड़ चुके हैं। डिजिटल कृषि में क्राप सर्वे, रिफेरेंस रजिस्ट्री, फार्मा रजिस्ट्री और पीएम किसान डाटा बेस का उपयोग कर प्रदेश के किसानों के हित में कार्य किया जा रहा है। यह बात मुख्यमंत्री ने केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में नई दिल्ली में प्राकृतिक खेती और डिजिटल कृषि पर हुई बैठक के दौरान कही। मुख्यमंत्री बैठक में निवास कार्यालय से वर्चुअली शामिल हुए।

किसानों के संपर्क में कृषि अधिकरी

केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर, केन्द्रीय रसायन एवं उर्वरक मंत्री मनसुख मांडविया उपस्थित थे। प्राकृतिक खेती और डिजिटल कृषि पर प्रस्तुतिकरण हुआ। बैठक में मणिपुर, असम, गोवा, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र, त्रिपुरा, उत्तराखंड और उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री तथा हिमाचल प्रदेश, हरियाणा एवं अरुणाचल प्रदेश के कृषि मंत्रियों ने अपने-अपने राज्यों में प्राकृतिक खेती और डिजिटल कृषि क्षेत्र में संचालित गतिविधियों की जानकारी दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश में प्राकृतिक खेती अपनाने वाले किसानों को प्रोत्साहन और मार्गदर्शन उपलब्ध कराने के लिए कृषि विभाग का अमला किसानों से लगातार संपर्क में है।

» डिजिटल कृषि किसानों से संबंधित शासकीय प्रक्रियाओं के सरलीकरण में सहायक

» केन्द्रीय गृह मंत्री शाह की अध्यक्षता में प्राकृतिक और डिजिटल कृषि पर हुई बैठक

गाय पालन को दे रहे बढ़ावा

किसान सरलता से प्राकृतिक खेती कर पाएं, इस उद्देश्य से किसानों को देशी गाय पालने के लिए प्रोत्साहन स्वरूप प्रतिमाह 900 रुपए उपलब्ध कराए जा रहे हैं। कृषि पाठ्यक्रमों में स्नातक और स्नातकोत्तर कर रहे विद्यार्थियों को प्राकृतिक खेती से जोड़ा जा रहा है। डिजिटल कृषि के क्षेत्र में ई-उपार्जन और फसल बीमा योजना से कृषकों के लिए प्रक्रियाओं को सरल बनाया गया है। किसान को घर और खेत से ही कृषि उपज विक्रय की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है।

भारत में दूध-घी की बहेंगी नदियां

केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि प्राकृतिक खेती और डिजिटल कृषि के क्षेत्र में विभिन्न राज्यों द्वारा किए जा रहे नवाचार एक दिशा में हों, इस उद्देश्य से बैठक की गई है। प्राकृतिक खेती गाय पर आधारित परंपरागत खेती है, जो धरती के सभी तत्वों के संरक्षण पर आधारित है। एक समय यह कहा जाता था कि भारत-भूमि में दूध और घी की नदियां बहती हैं। वर्तमान में प्राकृतिक खेती से ही यह स्थिति पुन:निर्मित होगी।

गौ-शालाओं को भी जोड़ें

केन्द्रीय मंत्री शाह ने कृषि विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में प्राकृतिक खेती को शामिल करने, कृषि विभाग के विस्तार कर्मचारियों को प्राकृतिक खेती पर किसान का सकारात्मक मानस निर्मित करने, सफल प्राकृतिक खेती वाले गांवो में किसान का भ्रमण कराने जैसी गतिविधियों को मिशन मोड में अपनाने और गौ-शालाओं को प्राकृतिक खेती से जोड़ने का सुझाव दिया।

किसानों की आय होगी दोगुनी

शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री की दूरदर्शिता के परिणाम स्वरूप ही भारत में डिजिटल कृषि से संबंधित गतिविधियों का क्रियान्वयन शुरू हो पाया है। कृषि विविधता से परिपूर्ण हमारे देश में कृषि की विभिन्न उपजों का उत्पादन देश की मांग के अनुसार करने में इस अभियान से मदद मिलेगी और देश विभिन्न उत्पादों में आत्म-निर्भर हो सकेगा। आर्टिफिशियल इन्टेलीजेंस पर आधारित तकनीकें किसानों के उत्पाद का सही मूल्य दिलाने में मदद करेंगी। साथ ही किसान की आय दोगुनी करने के प्रयासों को संस्थागत स्वरूप में आगे बढ़ाया जा सकेगा।

आएगा बदलावः तोमर

केन्द्रीय कृषि मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि पात्र व्यक्ति का हक उस तक पारदर्शिता के साथ निर्बाध रूप से पहुंचे, यह सुनिश्चित करने प्रधानमंत्री प्रतिबद्ध हैं। केन्द्र और राज्य सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन में डिजिटल कृषि से क्रांतिकारी परिवर्तन आएगा। प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए किसानों का मानस बनाने और उन्हें प्रशिक्षण उपलब्ध कराने के लिए सघन प्रयास किए जा रहे हैं।

किसानों को अधिक लाभ मिलेगाः मांडविया

केन्द्रीय रसायन एवं उर्वरक मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा कि रासायनिक उर्वरकों का मानव स्वास्थ्य पर घातक प्रभावों को देखते हुए प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। रासायनिक उर्वरकों के अधिक उपयोग से उत्पादन तो बढ़ा है, पर इससे खाद्य सामग्री का पोषण असंतुलन भी बढ़ा है। प्राकृतिक खेती के उत्पाद, स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभप्रद हैं। इनका मूल्य भी किसानों को अधिक मिलेगा। डिजिटल कृषि से किसान के उत्पाद का वैल्यू एडिशन करने और योजना का लाभ किसानों को सरलता से उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी।

पेपर रहित ऋण भी मिलेगी मदद

बैठक में हुए प्रस्तुतिकरण में बताया गया कि प्रधानमंत्री ने प्राकृतिक खेती में गाय के गोबर, मूत्र और वनस्पति के उपयोग से रसायन मुक्त पारंपरिक खेती को जन-आंदोलन बनाने का आह्वान किया है। प्राकृतिक खेती मिट्टी की सेहत और जलवायु परिवर्तन की दृष्टि से अनुकूल है। इसमें लागत भी कम आती है। डिजिटल कृषि पर हुए प्रस्तुतिकरण में बताया गया कि किसानों की डिजिटल आइडेंटिटी निर्मित कर, उनकी भूमि, किसान द्वारा ली जाने वाली फसल और विभिन्न जानकारियों को संबंधित संस्था से जोड़ा जाएगा। इससे किसानों का डाटाबेस बना कर उन्हें मार्गदर्शन उपलब्ध कराने, फसल के लिए संपर्क रहित-पेपर रहित ऋण उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी।

कई फसलों की खेती के लिए अच्छा समय

अक्टूबर में अन्नदाता करेंगे बोवनी तो होगी बंपर कमाई

भोपाल। जागत गांव हमार

भारत में खेती और किसानों के लिहाज से अक्टूबर का महीना बेहद खास होता है। इस समय खरीफ फसलों की कटाई के साथ ही रबी फसलों की बोवनी की जाती है, इसलिए किसानों को मिट्टी की जांच से लेकर खेत को तैयार करने में सावधानियां बरतनी चाहिए। बोवनी से पहले खाद-बीज का सही इस्तेमाल और सिंचाई की सही व्यवस्था करके भी रबी फसलों से बेहतर उत्पादन ले सकते हैं। अक्टूबर माह में खाद्यान्न फसलें से लेकर फल, सब्जी और कुछ औषधीय फसलों की बोवनी की जाती है। इन फसलों में अरहर, मूंगफली, शीतकालीन मक्का, शरदकालीन गन्ना, तोरिया, राई सरसों, चना, मटर, बरसीम, गेहूं, जौ आदि शामिल है, जिनकी खेती करके किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। गेहूं की खेती- गेहूं न सिर्फ भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसल है, बल्कि रबी सीजन की भी नकदी फसल है। धान की कटाई के बाद ज्यादातर किसान गेहूं की फसल लगाते हैं। इसकी बोवनी 20 अक्टूबर से शुरू की जाती है। बेहतर पैदावार के लिए खेत को जैविक विधि से तैयार करके मिट्टी में खरपतवार नाशी दवा डालने की सलाह दी जाती है।

भारत में गेहूं की कई - मक्का की खेती- मक्का भी एक प्रमुख नकदी फसल है। आधुनिक खान-पान के चलते बाजार में इसकी डिमांड बढ़ती जा रही है। किसान चाहें तो मक्का की साधारण प्रजातियों की जगह स्वीट कॉर्न और बेबीकॉर्न की खेती कर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। अक्टूबर के तीसरे सप्ताह से लेकर नवंबर का पहला सप्ताह तक मक्का की बोवनी करने के बाद अप्रैल-मई तक फसल पककर तैयार हो जाती है। बता दें कि इस फसल में बीमारियां लगाने की संभावना कम ही रहती है, जिससे किसानों को कम लागत में अच्छी आमदनी मिल जाती है।

चना की खेती

देश-दुनिया में पोषक अनाजों की बढ़ती डिमांड के बीच चना की खेती फायदे का सौदा साबित हो सकता है। इसकी बोवनी के लिए अक्टूबर का दूसरा सप्ताह सबसे सही रहता है। इस बीच चना की उन्नत किस्मों का बीज उपचार करके ही बोवनी का काम करना चाहिये। फसल में कीट-रोग और खरपतवार को बढ़ने से रोकने के लिये खेत की तैयारी के समय ही गहरी जुताई लगाई जाती है।

गेहूं की खेती

गेहूं ना सिर्फ भारत की प्रमुख खाद्यान्न फसल है, बल्कि रबी सीजन की भी नकदी फसल है। धान की कटाई के बाद ज्यादातर किसान गेहूं की फसल लगाते हैं। इसकी बुवाई 20 अक्टूबर से शुरू की जाती है। बेहतर पैदावार के लिये खेत को जैविक विधि से तैयार करके मिट्टी में खरपतवारनाशी दवा डालने की सलाह दी जाती है। भारत में गेहूं की कई देशी और हाइब्रिड किस्में मौजूद है।

राई-सरसों- प्रमुख तिलहनी फसल सरसों और राई की खेती के लिये भी अक्टूबर का महीना सबसे उपयुक्त रहता है। इन फसलों की खेती के साथ-साथ मधुमक्खी पालन करके किसान डबल आमदनी ले सकते हैं। अच्छी सिंचाई से सरसों की फसल में अधिक तेल बनता है। सरसों की खेती से पहले मिट्टी की जांच के आधार पर ही खाद-उर्वरकों का इस्तेमाल करना चाहिए। वहीं छिड़काव विधि के बजाय कतारों में सरसों की बिजाई करनी चाहिए।

दिल्ली-एनसीआर में लगाई जाएंगी वेंडिंग मशीन

मोटे अनाजों की बाजार तक पहुंच बनाएगा नेफेड

भोपाल। जागत गांव हमार

मोटे अनाजों की तकदीर बदलने जा रही है। बेहतर पौष्टिक गुणों से भरपूर मोटे अनाज देश में लंबे समय से हाशिये पर थे। लेकिन, मोदी सरकार के प्रयासों के बाद मोटे अनाजों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान मिलने जा रही है। जिसके तहत वर्ष 2023 को संयुक्त राष्ट्र ने इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट (मोटे अनाजों को समर्पित अंतराष्ट्रीय वर्ष) के रूप में मनाने का फैसला लिया है। इसी कड़ी में केंद्र सरकार ने देश में मोटे अनाजों को बढ़ावा देने और उनकी बाजारों तक पहुंच सुनिश्चित कराने के लिए काम करना शुरू कर दिया है। जिसमें भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ लिमिटेड (नेफेड) की अहम भूमिका तय की गई है। जिसको लेकर नेफेड और कृषि व किसान कल्याण मंत्रालय के बीच एक करार हुआ है।

इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स की पहल को ध्यान में रखते हुए नेफेड और कृषि मंत्रालय मोटे अनाज आधारित उत्पादों के प्रचार और विपणन के लिए मिलकर काम करेंगे। इसी कड़ी में दिल्ली-एनसीआर में मोटे अनाज आधारित वेंडिंग मशीनों की स्थापना भी की जाएगी। वहीं दोनों संस्थानपूरे देश में अधिकतम मूल्य निर्माण और मोटे अनाज आधारित उत्पादों के लिए समर्थन, संगठित प्रचार, बाजार और प्रभावी बाजार

सहयोग और सहायता प्रदान करेंगे

करार के तहत कृषि और किसान कल्याण विभाग और नेफेड कुछ प्रमुख क्षेत्रों जैसे मूल्यसंवर्धित मोटे अनाज आधारित उत्पादों के निर्माताओं/प्रोसेसरों को परामर्श सहायता उपलब्ध कराना, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च (आईआईएमआर) के पैनल में शामिल स्टार्ट-अप्स सहित अन्य स्टार्ट-अप्स की ऑन-बोर्डिंग, विशेष रूप से मोटे अनाज आधारित उत्पादों की एक श्रृंखला विकसित करने के लिए एफपीओ का गठन, नेफेड बाजार भंडारण, विपणन करना तथा मोटे अनाज आधारित वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करने में सहयोग और सहायता प्रदान करेंगे।

मोटे अनाजों के लिए अहम-2023

मोटे अनाजों के लिए वर्ष 2023 अहम होने जा रहा है। असल में संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 2023 को इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स के तौर पर मनाने का फैसला लिया है। इसके पीछे मोदी सरकार के प्रयासों की भूमिका अहम है। असल में मोदी सरकार ने वर्ष 2019 को देश में मिलेट्स वर्ष के तौर पर मनाया था। जिसके बाद मोटे अनाजों की पौष्टिकता को रेखांकित करते हुए इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र को दिया था। जिसके बाद संयुक्त राष्ट्र ने 2023 को इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स के तौर पर मनाने की घोषणा की है।

गेहूं की तुलना में सरसों की खेती में लागत कम मुनाफा ज्यादा

शिवपुरी, गुना-अशोकनगर में बढ़ा सरसों की खेती का रकबा

खेमराज मौर्य। शिवपुरी

पीला सोना के नाम से मशहूर सरसों की खेती चंबल संभाग के भिंड व मुरैना जिले में सबसे ज्यादा होती है, लेकिन अब शिवपुरी, गुना और अशोकनगर क्षेत्र के किसानों को भी सरसों की खेती भा रही है। यही कारण है कि यहां तीन साल में सरसों का रकबा बढ़कर तीन गुना हो गया है। इसका प्रमुख कारण गेहूं की तुलना में सरसों की खेती करने में लागत कम और मुनाफा ज्यादा होना है। ऐसा इसलिए भी हुआ क्योंकि साल 2020 से लेकर अब तक गेहूं के दाम में तकरीबन 35 फीसदी ही बढ़े जबकि सरसों दोगुनी महंगी हो गई। हालांकि अभी भी चंबल संभाग के भिंड और मुरैना जिले में मप्र को 65 फीसदी सरसों की खेती हो रही है। अच्छी पैदावार के कारण मुरैना में तो कई तेल मिल भी हैं। साथ ही बड़ी इंडस्ट्रीज के लिए भिंड मुरैना जिलों से सरसों की बाहर सप्लाई भी होती है।

उड़द- सोयाबीन की फसल खराब हुई तो बो दी सरसों- जिले में साल 2020 में सरसों का रकवा महज 48 हजार हेक्टेयर था। साल 2021 में ज्यादा बारिश होने से उड़द व सोयाबीन की फसल खराब हो गई। ऐसे में 2021 के रबी सीजन में सरसों का रकबा 1.19 लाख हेक्टेयर हो गया। अब इस साल कृषि विभाग ने सरसों का अनुमानित रकबा 1.25 लाख हेक्टेयर तय किया है, लेकिन कृषि अधिकारियों का मानना है कि इस साल सरसों की बोवनी 1.50 लाख हेक्टेयर तक पहुंच सकती है।

बढ़ी किसानों की कमाई

साल 2020 में सरसों के दाम 3800 से 4000 रुपए प्रति क्विंटल के आसपास रहे थे। 2021 में भाव बढ़कर 7000 रुपए प्रति क्विंटल तक पहुंच गए। इस साल भी सरसों 7900 रुपए प्रति क्विंटल तक बिक गई थी। इस प्रकार किसानों की कमाई दोगुनी हो गई। हालांकि बाद में भाव गिर गए। गल्ला व्यापारी अगली साल भी भाव ऐसे ही रहने या और बढ़ने की संभावना जता रहे हैं। साल 2020 में गेहूं के दाम 1600 से 1700 रुपए प्रति क्विंटल रहे थे। 2021 में गेहूं 2200 रुपए और 2022 में 2350 रुपए प्रति क्विंटल तक बिका। इस प्रकार किसानों को करीब 35 प्रतिशत ज्यादा कमाई हुई लेकिन 2022 में भाव पड़ने का प्रमुख कारण रूस यूक्रेन युद्ध के कारण के कारण विदेशों से की मांग आना है।

किसानों की रुचि बढ़ने के 5 कारण

- अन्य फसलों की तुलना में सरसों की बोवनी में कम लागत आती है। देखभाल की भी ज्यादा जरूरत नहीं रहती।
- पिछले साल 15 अक्टूबर तक सरसों की बोवनी हो गई थी। इस साल भी किसानों के पास पर्याप्त समय है।
- समय पर बोवनी से फूल व फल आ गया, जिससे माहू का प्रकोप न के बराबर रहा। रोग की कम आशंका रहती है।
- पिछले साल सरसों के दाम 6 -7 हजार रु. प्रति क्विंटल रहे। इस साल दाम और बढ़ने की संभावना है।
- सरसों की खेती में सामान्य रूप से एक बार पानी देना पड़ता है, गेहूं में कम से कम तीन पानी की जरूरत पड़ती है।

- सरसों कम स्वागत में अधिक मुनाफा वाली फसल है। एक हेक्टेयर में मात्र 5 किलो बीज व एक पानी की जरूरत रहती है जबकि उत्पादन 20 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक रहता है। भंडारण से नुकसान की समस्या नहीं है। कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा भी सरसों की फसल को विधि-विकरण के रूप में बढ़ावा दिया जा रहा है।
  -एमके भार्गव, वरिष्ठ कृषि वैज्ञानिक, शिवपुरी
- सरसों तेल की अकेले मुरैना में ही 40 से अधिक इंडस्ट्रीज है, जिसकी वजह से ग्वालियर-चंबल संभाग के अलावा पड़ोसी प्रांत के सरसों की डिमांड है। हालांकि सरकार ने विदेशी तेल जैसे सोया, पाम, राइसब्रान से ड्यूटी घटाकर इंपोर्ट बढ़ा दिया है।
  दीपू बंसल, तेल कारोबार विशेषज्ञ
- इस साल 1.25 लाख हेक्टेयर में सरसों की बोवनी का लक्ष्य रखा है। हलांकि सरसों को बोवनी 1.50 लाख हेक्टेयर में रहने का अनुमान है, क्योंकि अन्य फसलों से सरसों में ज्यादा फायदा रहने से किसानों का ज्यादा रुझान है।
  -यूएस तोमर, उप संचालक कृषि

हरदा में कृषि मंत्री कमल पटेल ने मंच से जताई नाराजगी, कहा

पात्रों को लाभ नहीं मिला तो सचिव-कलेक्टर पर गिरेगी गाज

हरदा। जागत गांव हमार

हरदा जिले की खिरकिया तहसील में मुख्यमंत्री जन सेवा अभियान के तहत कार्यक्रम हुआ। ग्राम में भागपुरा में हुए कार्यक्रम में हितग्राहियों को योजनों के प्रमाण पत्र दिए गए। इसमें प्रदेश के वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा, स्कूल शिक्षा एवं सामान्य प्रशासन राज्य मंत्री इंदरसिंह परमार एवं कृषि मंत्री कमल पटेल मौजूद रहे। इस दौरान मंत्री गण ने बालिका माही कलम व सिया कलम को लाड़ली लक्ष्मी योजना के तहत प्रमाण-पत्र प्रदान किए। उन्होंने गांव की कुछ महिलाओं को प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के तहत गैस कनेक्शन दिए। वित्त मंत्री देवड़ा ने जिला प्रशासन के अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिले के सभी गरीब परिवारों को उनकी पात्रता के आधार पर योजनाओं का लाभ दिलाया जाए। सरकार गरीबों, आदिवासियों, किसानों, महिलाओं सहित समाज के सभी वर्गों की भलाई के लिए संकल्पित है।

कृषि मंत्री ने दिए निर्देश

कृषि मंत्री पटेल ने कहा कि हरदा जिले में प्रारंभ किए आपकी समस्या का हल आपके घर अभियान से जिले के हजारों ग्रामीणों को घर बैठे सरकार की योजनाओं का लाभ मिलने लगा है। इसी तर्ज पर प्रदेश सरकार ने मुख्यमंत्री जन सेवा अभियान प्रारंभ किया है। अधिकारी-कर्मचारी घर-घर जाकर सर्वे कर रहे हैं। सरकार की योजनाओं से लाभान्वित करने के लिए हितग्राही चिन्हित कर रहे हैं। उन्हें योजनाओं का लाभ दिला रहे हैं। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित एक गरीब आदिवासी कमल सिंह को जाति प्रमाण-पत्र तत्काल दिलाने तथा कमल सिंह व उसकी पत्नी की वृद्धावस्था पेंशन स्वीकृत करने के निर्देश उपस्थित अधिकारियों को दिए। उन्होंने कड़े लहजे में अधिकारियों से कहा कि 31 अक्टूबर तक जिले के अधिकारी-कर्मचारियों के माध्यम से सर्वे कराकर प्रत्येक व्यक्ति को उसकी पात्रता के अनुसार योजनाओं से लाभान्वित कराया जाए। अगर पात्रों को योजनाओं का लाभ नहीं मिला तो पंचायत सचिव से लेकर कलेक्टर तक को निलंबति किया जाएगा।

खेती और स्वच्छता में प्रथम मप्र

स्कूल शिक्षा मंत्री परमार ने कहा कि प्रदेश में गरीबों के लिए बहुत सी योजनाएं प्रारंभ की हैं। संबल योजना के तहत मजदूरों के बच्चों की शादी व पढ़ाई के लिए मदद दी जा रही है। मजदूर के नि:शुल्क उपचार, सस्ती दर पर खाद्यान्न तथा मजदूरों की मृत्यु पर उनके परिवार को 4 लाख तक की आर्थिक सहायता की व्यवस्था संबल योजना के तहत की गई है। उन्होंने कहा कि हमारा प्रदेश खेती के क्षेत्र में भी नम्बर वन है और स्वच्छता के क्षेत्र में भी नम्बर वन है।

-सरकार ने उपार्जित अनाज के भंडारण के लिए नीति में किया बदलाव

निजी गोदाम संचालक नुकसान की जिम्मेदारी से होंगे 'आजाद'

भोपाल। जागत गांव हमार

राज्य सरकार ने उपार्जित अनाज के भंडारण के लिए नीति में बदलाव किया है। इसके तहत प्रदेश में गेहूं, धान और मोटे अनाज के उपार्जन के बाद निजी गोदामों में भंडारण के बाद अब भंडार गृह संचालक उस अनाज के खराब होने और अनाज में सूखत की वजह से वजन कम होने पर होने वाले नुकसान की जिम्मेदारी से मुक्त होंगे। भंडारगृह निगम अब केवल गोदाम के भवन ही किराए पर लेगी, अनाज के रखरखाव की जिम्मेदारी निगम खुद उठाएगा या उसके लिए अलग एजेंसी की जिम्मेदारी तय करेगा। अब इस नई योजना के जरिए ही प्रदेश के निजी गोदामों को किराए पर लिया जाएगा।

मिलावट की शिकायतें आम: गौरतलब है की अक्सर निजी भंडारगृहों में रखे जाने वाले अनाज के रखरखाव में अनियमितता के कारण कई बार अनाज खराब हो जाता है। उसके वजन में कमी आ जाती है। मिलावट की शिकायतें भी आती है। इन सब की भरपाई निजी गोदाम संचालक को करना पड़ता है। इसके चलते निजी गोदाम संचालक सरकारी धान, अनाज रखने से पीछे हट रहे है। प्रदेश में भारत सरकार की भंडारण नीति के अनुसार कैप में भी धान का भंडारण होता है और इसके लिए 24 रुपए प्रति मेट्रिक टन भुगतान किया जाता है।

भंडारण के लिए नई योजना - प्रदेश में धान मिलिंग की सुविधा सीमित होंने के कारण धान का भंडारण कवर्ड गोदामों में भी करना होता है। छह माह के लिए भंडारण पर सरकार को हर साल 240 करोड़ रुपए खर्च करना होता है। लंबी अवधि तक भंडारण के कारण सूखत का प्रतिशत बढ़ जाता है। इसके कारण होंने वाले नुकसान को देखते हुए निगी गोदाम संचालक धान भंडारण के प्रति उदासीन देखे जा रहे है। निजी गोदाम संचालकों को नुकसान की चिंता से मुक्त करने अब राज्य सरकार ने भंडारण के लिए नई योजना शुरू की है।

सरकारी गोदामों को देंगे प्राथमिकता

नई नीति के तहत राज्य सरकार उपार्जित अनाज के भंडारण के लिए अब पहले शासकीय गोदामों को प्राथमिकता देगी। इसके बाद निजी गोदामों में अनाज रखा जाएगा। इसमें भी जिन निजी गोदामों के पास वे ब्रिज की सुविधा है दूसरे नंबर पर वहां के गोदामों में अनाज रखा जाएगा। खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग के प्रमुख सचिव फैज अहमद किदवई ने उपार्जित अनाज के भंडारण के लिए नये नियम जारी कर दिए है। इस कड़ी में अब मूंग उपार्जन एवं भंडारण के लिए नये नियमों का पालन किया जाएगा। मुख्यमंत्री को शिकायत मिली थी कि भंडारण के लिए वेयरहाउस के चयन में अनियमितताएं की जाती है। इसके बाद भंडारण के कामों में पारदर्शिता के लिए ये नियम जारी किए गए है।

अनुबंधिम गोदाम को देंगे बढ़ावा

मूंग उपार्जन और भंडारण के लिए सबसे पहले भंडारण और उपार्जन शासकीय गोदाम में किया जाएगा। क्षेत्रीय प्रबंधक और जिला प्रबंधक एमपी डब्ल्यूएलसी शासकीय गोदामों में उपलब्ध भंडाण क्षमता की प्रमाणीकृत जानकारी जिला कलेक्टर को उपलब्ध कराएंगे। शासकीय गोदामों में अनुमानित उपार्जन के लिए पर्याप्त भंडारण क्षमता न होंने की स्थिति में शेष भंडारण आवश्यकता के लिए उपार्जन एवं भंडारण एमपी डब्ल्यूएलसी से अनुबंधित निजी गोदामों में किया जाएगा।

कम दूरी वालों को भी मिलेगा फायदा

अनुबंधित निजी गोदामों के चयन के लिए भी प्राथमिकता तय की गई है। सबसे पहले उन निजी गोदामों में भंडारण होगा जिनके परिसर में वे ब्रिज की सुविधा उपलब्ध है। दूसरी प्राथमिकता उन निजी गोदामों को दी जाएगी जिनकी चार किलोमीटर की परिधि में वे ब्रिज उपलब्ध है। तीसरी प्राथमिकता उन निजी गोदामों को मिलेगी जो मुख्य राष्ट्रीय या राज्य और जिला मार्ग पर स्थित है। इसके बाद भी पर्याप्त भंडारण क्षमता उपलब्ध नहीं होंने पर अन्य निजी गोदामों में भंडारण होगा।

लाइसेंस लेने वाले को देंगे प्राथमिकता

जहां दो या अधिक निजी अनुबंधित गोदाम प्राथमिकता क्रम में समान स्थिति मे हो तो फिर उस गोदाम को पहले लिया जाएगा जो पीएमएस का कार्य एमपी डब्ल्यूएलसी या एमपी डब्ल्यूएलसी द्वारा अनुबंधित एजेंसी को सौंपने के लिए लिखित सहमति प्रस्तुत करें। ऐसी सहमति के दो मामले एक साथ आने पर पहले लाइसेंस लेने वाले को प्राथमिकता दी जाएगी। चयनित गोदामों की सूची में कलेक्टर रेंडम जांच कर सकेंगे। यह सूची वेबसाईट के साथ संबंधित कार्यालयों के नोटिस बोर्ड पर भी चस्पा की जाएगी। प्राथमिकता क्रम में किसी गोदाम संचालक द्वारा चयन में आपत्ति दर्ज कराए जाने पर इसका निराकरण एक सप्ताह के भीतर किया जाएगा।

भोपाल से जन जन तक जैविक अभियान शुरू

भोपाल। जागत गांव हमार

भोपाल के गांधी भवन सभागार में हुए एक सादगीपूर्ण भव्य समारोह में जन जन तक रसायन और कीटनाशक रहित स्वास्थ्य वर्धक जैविक खाद्य पदार्थ पहुंचाने के महत्वाकांक्षी अभियान की शुरुआत ग्राम सेवा समिति, नमन सेवा समिति और गांधी भवन के संयुक्त तत्वावधान में प्रारंभ हुई। इस अवसर पर मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के जैविक उत्पादक किसान समूहों, भोपाल के जैविक उपभोक्ताओं के साथ उत्प्रेरक के रूप में कई समाजसेवी संस्थाओं और मध्य प्रदेश शासन के वरिष्ठ अधिकारियों ने एक मंच से जन जन तक जैविक अभियान को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। जन जन तक जैविक अभियान के संयोजक डॉ. आर के पालीवाल, आइ आर एस ने इस अभियान के बारे में बताया कि यह एक ऐसा अभियान है जिसमें देश के हर नागारिक की भागीदारी जरूरी है ताकि सब किसान जहर मुक्त जैविक खेती कर नागरिकों को स्वास्थ्य वर्धक खाद्य पदार्थ उपलब्ध करा सकें और उपभोक्ता किसानों को उचित मूल्य चुकाकर किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने में सहायक हों और समाजसेवी संस्थाएं और सरकार इस अभियान की जन जागरूकता के माध्यम से इस अभियान को आगे बढ़ाकर प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण करने वाली और नागरिकों को स्वस्थ रखने वाली जैविक खेती के लिए उचित वातावरण तैयार कर सकें।

मदद का संकल्प

इस अवसर पर अनेक गणमान्य विभूतियों पदम विजय दत्त श्रीधर , पूर्व चीफ कमिश्नर इनकम टैक्स मध्य प्रदेश ए के जैन, पूर्व डी जी पी इनकम टैक्स मध्य प्रदेश असित चंद्रा, गांधीवादी विचारक दयाराम नामदेव और लखनऊ से आए गौ उत्पादक संघ के अध्यक्ष राधेश्याम दीक्षित आदि ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कर अभियान को आगे बढ़ाने में हर संभव प्रयास करने का संकल्प लिया।

इन्होंने भी व्यक्त किए विचार

इस अवसर पर पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त ओ पी रावत आईएएस, मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति और हिंदी भवन भोपाल के अध्यक्ष कैलाश चंद पंत, पूर्व डीजीपी मध्य प्रदेश पीएल पांडे, आईपीएस, प्रमुख सचिव कृषि मध्य प्रदेश शासन अजीत केसरी आईएएस, प्रमुख सचिव उद्यानिकी मध्य प्रदेश शासन जेएन कंसोटिया आईएएस, पूर्व निदेशक उद्यानिकी मध्य प्रदेश सरकार डॉ. कौशल, अपर निदेशक कृषि मप्र सरकार धुर्वे और नमन सेवा समिति के निदेशक शिशिर कुमार ने इस अभियान पर अपने विचार व्यक्त किए।

किसानों की आय का अच्छा जरिया बन सकता है बत्तख पालन

» डॉ.चन्द्रपाल सिंह सोलंकी
» डॉ. तृप्ति सिंह
» डॉ.बृजमोहन सिंह धाकड़
» डॉ. भावना गुप्ता
» डॉ. अजय राय
» डॉ. मधु सिंह
- विषय वस्तु विशेषज्ञ कृषि विज्ञान केंद्र रायगढ़, (छ.ग.)
- पशु चिकित्सा सहायक शल्यज्ञ रायगढ़
- पशुचिकित्सा जनस्वास्थ्य और महामारी विज्ञान विभाग पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, ना.दे. प.वि.वि.जबलपुर(मप्र)
-पशुसूक्ष्मजीव विज्ञान विभाग पशु चिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय, ना.दे.प.वि.वि. जबलपुर (म. प्र.)
- वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान हिसार-हरियाणा

हमारे देश के ग्रामीण किसानों को बत्तख पालन के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है, ताकि किसान मौजूदा परिस्थितियों में अपनी आय और आजीविका बढ़ा सकें। बत्तख पालन अभी भी गरीब ग्रामीण किसानों के हाथ में है, जो अपनी आजीविका और रोजगार के लिए मुख्य रूप से बत्तखों पर निर्भर हैं। चूंकि बत्तख की खेती में औद्योगीकरण की कोई प्रक्रिया नहीं हुई है, इसलिए इसके पालन के तरीके पारंपरिक, खानाबदोश और कभी-कभी आदिम होते हैं।

भारत के वर्तमान जलवायु और भौगोलिक स्थिति के तहत, बतख में न्यूनतम निवेश पर आय सृजन की काफी संभावनाएं हैं। बत्तख प्रति वर्ष प्रति पक्षी मुर्गी की तुलना में अधिक अंडे देती है। बत्तख के अंडे का आकार मुर्गी के अंडे से लगभग 15 से 20 ग्राम बड़ा होता है। बत्तखें सुबह या रात में अंडे दे सकती हैं। बत्तखें अपने अंडे 95-98प्रतिशत सुबह 9 बजे से पहले देती हैं। इस प्रकार बहुत समय और श्रम की बचत होती है।

बत्तखों को कम ध्यान देने की आवश्यकता होती है। बत्तखों को चिकन जैसे विस्तृत घरों की आवश्यकता नहीं होती है। बत्तखों को सस्ते आश्रय में पाला जा सकता है। उद्यम को अधिक लाभदायक बनाने के लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री घरों के निर्माण में अच्छा काम कर सकती है। बत्तखों को पालने के लिए आपको काफी कम जगह की आवश्यकता होगी। इसके अलावा, बत्तखों की ब्रीडिंग अवधि अपेक्षाकृत कम होती है। बत्तखें बहुत तेजी से बढ़ती हैं। बत्तख कठोर पक्षी हैं इसलिए उन्हें कम प्रबंधन और देखभाल की आवश्यकता होती है। वे जल्दी से सभी प्रकार की पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुकूल हो सकते हैं। व्यावसायिक दृष्टि से, बत्तखों का जीवन लंबा होता है। वे दूसरे वर्ष में भी अच्छी तरह से लेटे रहे। वे अधिक विस्तारित अवधि के लिए अंडे भी देते हैं। बत्तखों में न केवल मुर्गे की तुलना में मृत्यु दर कम होती है। बत्तख काफी कठोर, अधिक आसानी से उखड़ जाती हैं और सामान्य एवियन रोगों के लिए अधिक प्रतिरोधी होती हैं।

बत्तख एकीकृत कृषि प्रणाली जैसे बत्तख-सह-मछली पालन, चावल की खेती के साथ बत्तख पालन के लिए उपयुक्त हैं। बत्तख-सह-मछली की खेती में बत्तखों की बूंदें मछलियों के लिए चारा का काम करती हैं और मछलियों के लिए तालाब का कोई अन्य चारा या खाद आवश्यक नहीं है (200-300 बत्तख प्रति हेक्टेयर अपशिष्ट क्षेत्र)। चावल की खेती के साथ एकीकृत बतख पालन के तहत, बतख चार आवश्यक कार्य करते हैं, जैसे कि वे भोजन की तलाश करते हैं, उनके बिल चावल के पौधों के आसपास की मिट्टी को ढीला कर देते हैं-निराई, कीट नियंत्रण और खाद।

बतख आलू भृंग, टिड्डे, घोंघे और स्लग के अच्छे संहारक हैं। जिन क्षेत्रों में लीवर फ्लूता है, वहां बत्तख समस्या को ठीक करने में मदद कर सकती हैं (प्रति 0.405 हेक्टेयर भूमि में 2 से 6 बत्तख)। अंडे और मांस जैसे बतख उत्पादों की स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में उच्च मांग है। इसलिए वाणिज्यिक बत्तख का पालन आय प्राप्त करने का एक शानदार तरीका है। इस व्यवसाय में कई सफल किसान बहुत पैसा कमा रहे हैं।

कुक्कुट पालन की तुलना में बत्तख पालन के लाभ

मुर्गियों की तुलना में बत्तखों को किसी विस्तृत आवास और कम ध्यान देने की आवश्यकता नहीं होती है। बत्तख मुर्गी से लगभग 40-50 अंडे अधिक देती है। मुर्गी के अंडे से 15-20 ग्राम बड़े होते हैं। बत्तखें कठोर, अधिक आसानी से प्रशिक्षित होती हैं और कई एवियन रोगों के प्रतिरोधी होती हैं। चारा खिलाने की आदत के कारण मुर्गी पालन की तुलना में बत्तख पालन किफायती है। दलदली नदी के किनारे और गीली भूमि बत्तख पालन के लिए उत्कृष्ट स्थान हैं जहां चिकन या अन्य प्रकार के पशुधन नहीं पनपेंगे। नरभक्षण और अज्ञेय व्यवहार जो चिकन में बहुत आम है, आमतौर पर बत्तखों के साथ नहीं होता है। तुलनात्मक रूप से अधिक भारी होने के कारण, बत्तख के अंडे मुर्गी के अंडे की तुलना में प्रति अंडे अधिक पोषक तत्व प्रदान करते हैं। बतख सह मछली पालन जैसे एकीकृत कृषि प्रणालियों के लिए उपयुक्त हैं। वे मुर्गियों की तुलना में रोग और परजीवियों के प्रति इतने संवेदनशील नहीं होते हैं। अंडे सेने के बाद यह मुर्गियों की तुलना में बत्तखों को पालना आसान होता है। बत्तखों के नीचे और छोटे शरीर के पंख मूल्यवान होते हैं और विभिन्न औद्योगिक उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाते हैं। बतख आलू भृंग, ग्रास हॉपर, घोंघे और स्लग के अच्छे संहारक हैं। व्यावहारिक अनुभव और परीक्षण स्पष्ट रूप से दिखाते हैं कि बतख के अंडे मुर्गियों की तुलना में भंडारण के दौरान काफी लंबे समय तक अपनी ताजगी बनाए रखते हैं। विभिन्न अवसरों पर, चार महीने और लंबे समय तक अच्छी तरह से साफ किए गए बत्तख के अंडों को रेफ्रिजरेट किया है, जिसमें स्वाद में कोई बदलाव नहीं आया है। अंडे या मांस के उद्देश्य से बत्तखों को पालना अधिक किफायती है।

भारत में बत्तख पालन की अन्य समस्याएं: बत्तख पालन प्रथाओं पर वैज्ञानिक ज्ञान का अभाव - बहुत से लोगों को बत्तख पालन का तकनीकी ज्ञान नहीं है। इससे भारत में बत्तख पालन का अनुचित प्रबंधन होता है।

गुणवत्तापूर्ण बत्तखों की अनुपलब्धता: अक्षम बत्तख बाजार भारत में बत्तख की खेती में एक और समस्या है, छोटे जोत वाले उद्यमों का बढ़ता व्यावसायीकरण बतख पालन करने वाले किसानों के लिए समस्याएं पैदा कर रहा है। हमारे पास बाजार में स्वस्थ बत्तखों की कमी है। इससे मांस और अंडे के लिए निम्न-गुणवत्ता वाली बत्तखें पैदा होंगी। सरकार को इस मामले पर गौर करना चाहिए ताकि अच्छी गुणवत्ता वाली बत्तखें उपलब्ध कराई जा सकें।

वित्तीय संसाधनों की कमी: बत्तख पालन ऋण और सब्सिडी बहुत दुर्लभ है। इसलिए बत्तख पालन करने वाले किसानों के लिए वित्तीय बैकअप की भारी कमी है।

एक संगठित विपणन प्रणाली का अभाव: इस तथ्य के बावजूद कि बत्तख की खेती एक पुराना कृषि-व्यवसाय है, इसकी कोई विपणन प्रणाली नहीं है। इसलिए बत्तख पालन करने वाले किसानों को बत्तख का मांस और बत्तख के अंडे बेचने में कठिनाइयों का सामना करना पड़

2030 तक दुगुनी हो जाएगी दुनिया में गरीबी: रिपोर्ट

सतत विकास लक्ष्य-1 के तहत 2030 तक दुनियाभर से गरीबी का उन्मूलन करना है, लेकिन इससे आठ साल पहले दुनिया गरीबी के विरुद्ध छेड़े गए युद्ध में हताशा भरी स्थिति में पहुंच गई है। इसके अलावा यह भी निश्चित नहीं है कि दुनिया कब तक कुल आबादी के मुकाबले चरम गरीबी में रह रहे लोगों की संख्या को तीन प्रतिशत की निर्धारित सीमा तक रख पाएग
इसके विपरीत विश्व बैंक की हालिया रिपोर्ट पॉवर्टी एंड शेयर्ड प्रॉस्पेरिटी 2022: करेक्टिंग कोर्सेस कहती है कि मौजूदा परिस्थितियों में सबसे गरीब व विकासशील देशों के उप सहारा अफ्रीका और ग्रामीण इलाकों से गरीबी का उन्मूलन लगभग असंभव है।
विश्व बैंक की इस रिपोर्ट में कोविड-19और वर्तमान में जारी रूस-यूक्रेन युद्ध का वैश्विक गरीबी पर पड़ने वाले प्रभाव का विस्तार से आकलन किया गया है। महामारी से पहले लगातार पांच वर्षों तक गरीबी उन्मूलन की दर लगातार घट रही थी। महामारी ने जहां आर्थिक झटका दिया, वहीं युद्ध ने ऊर्जा और खाद्य की कीमतों को उछालकर हालात बदतर कर दिए।

कोविड महामारी के कारण गरीब और गरीब हो गए। उन्हें उम्मीद थी कि महामारी के बाद हालात सुधरेंगे, लेकिन तभी यूक्रेन-रूस युद्ध छिड़ गया। खाद्य और ऊर्जा के मूल्य में उछाल के साथ चरम मौसम की घटनाओं ने कृषि को बुरी तरह प्रभावित किया। साथ ही आपदाओं ने संपत्ति और आय का बंटाधार कर दिया। इन तमाम घटनाक्रमों ने हालात में सुधार को केवल असंभव ही नहीं बनाया है बल्कि लोगों को लंबे समय के लिए गरीबी की दलदल में पहुंचा दिया है।

नतीजतन, दूसरे विश्वयुद्ध के बाद गरीबी से खिलाफ छिड़ी जंग को सबसे बड़ा झटका लगा है। रिपोर्ट के अनुसार, इन झटकों ने गरीबी उन्मूलन की ट्रजेक्टरी को बदलकर उसे बड़ा और लंबा बना दिया। 2030 तक चरम गरीबी खत्म करने का लक्ष्य पथ से भटक गया है। महामारी ने 2020 में सात करोड़ अतिरिक्त लोगों को गरीबी में पहुंचा दिया है। इसका नतीजा यह निकला कि करीब 71.9 करोड़ अंतरराष्ट्रीय गरीबी रेखा से नीचे चले गए। ये लोग 2.15 डॉलर प्रतिदिन पर गुजर बसर कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो गरीबी की दर 2019 की 8.4 प्रतिशत से बढ़कर 9.3 प्रतिशत हो गई है।

भले ही दुनिया इस वक्त महामारी से उबर रही है लेकिन युद्ध के चलते 68.5 करोड़ लोग 2022 के अंत तक चरम गरीबी के स्तर पर पहुंच जाएंगे। रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है, दुनिया की 7 प्रतिशत आबादी यानी 57.4 करोड़ लोग 2030 तक चरम गरीबी से जूझ रहे होंगे। यह सतत विकास लक्ष्य-1 में निर्धारित 3 प्रतिशत की दर के मुकाबले दोगुना से भी अधिक है।

महामारी के कारण असमानता भी खाई भी चौड़ी हो गई है। यह पिछले कई दशकों के चलन के विपरीत है। महामारी से रिकवरी की तरह ही गरीबी में सुधार भी असमान है। विकासशील व गरीब देशों ने गरीबों की संख्या में सबसे अधिक वृद्धि की है और इन्हीं देशों में गरीबी की स्तर बदतर हुआ है। रिपोर्ट के मुताबिक, सबसे गरीब लोगों ने महामारी की सबसे बड़ी कीमत चुकाई है। उनकी आय में 4 प्रतिशत के औसत के मुकाबले 40 प्रतिशत का नुकसान हुआ है। इसी तरह अमीरों की आय के वितरण में 20 प्रतिशत नुकसान के मुकाबले दोगुना नुकसान गरीबों को हुआ है।

इस स्थिति को बैंक ने अपने अनुमान में चिंताजनक बताया है। उसके अनुसार, नीति निर्माताओं को अब कठोर पर्यावरण का सामना करना पड़ रहा है। चरम गरीबी उप सहारा अफ्रीका, संघर्षरत क्षेत्रों और ऐसे ग्रामीण क्षेत्रों में केंद्रित है, जहां से इसे खत्म करना बेहद मुश्किल है।

उदाहरण के लिए उप सहारा अफ्रीका में दुनिया की सबसे अधिक 35 प्रतिशत गरीबी की दर है और यहां दुनिया की 60 प्रतिशत चरम गरीब आबादी बसती है। सतत विकास लक्ष्य-1 को 2030 तक पूरा करने के लिए यहां के प्रत्येक देश की विकास दर अगले आठ वर्षों तक 9 प्रतिशत होनी चाहिए। मौजूदा स्थितियों में यह असंभव प्रतीत होता है, खासकर यह देखते हुए महामारी से पहले यहां की विकास दर दो प्रतिशत से भी कम थी।

वर्षावनों पर पड़ रहा है गर्मी का असर, कम हो रहा है कार्बन अवशोषण तथा मर रहे हैं पेड

शोध से पता चलता है कि अमेजन में स्थिति सबसे खराब है, अनुमान लगाया गया है कि यह कार्बन अवशोषण करने के बजाय 2035 तक कार्बन फैलाने वाले स्रोत में बदल जाएगा। जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षावनों में कार्बन को संग्रहित करने की क्षमता घट सकती है। इसका पहला कारण अधिक तापमान के दौरान वर्षावन प्रजातियों की पत्तियों में प्रकाश संश्लेषण दर के गिरने से है। दूसरा कारण सूखे के दौरान पेड़ों की प्राकृतिक तरीके से ठंडा होने की प्रणाली का विफल होना है। बढ़ती गर्मी विशेष रूप से उन प्रजातियों के लिए खतरा है जो सबसे अधिक कार्बन जमा करती हैं। यह अध्ययन गोथेनबर्ग विश्वविद्यालय की अगुवाई में किया गया है। उष्णकटिबंधीय इलाकों में पेड़ों की कुछ प्रजातियां बढ़ती गर्मी से अपने आप को ठंडा रखने के लिए अपनी पत्तियों से बड़ी मात्रा में पानी सोख कर पत्तियों के चौड़े खुले छिद्रों के माध्यम से स्थानांतरित कर सकते हैं। ये मुख्य रूप से तेजी से बढ़ने वाले पेड़ हैं जो वर्षावन के बड़े होने पर खुद को जल्दी स्थापित कर लेते हैं। पुराने जंगल वाले वर्षावन में ऐसा होगा यह कहा जा सकता है। वे धीमी गति से बढ़ते हैं, लेकिन बड़े और लम्बे हो जाते हैं और उनकी पत्तियों में वाष्पोत्सर्जन के माध्यम से खुद को ठंडा करने की क्षमता नहीं होती है।

पानी पत्तियों को एयर कंडीशनिंग की शक्ति देता है: मारिया विटमैन कहते हैं कि उष्णकटिबंधीय इलाकों में हिमयुग जैसा वातावरण नहीं रहा और इस प्रकार ऐतिहासिक और मौसमी रूप से अपेक्षाकृत यहां जलवायु स्थिर रही है। जलवायु परिवर्तन के साथ, यह गर्म होना शुरू हो गया, फिर हमने देखा है कि पेड़ों की कुछ प्रजातियों में मृत्यु दर में वृद्धि दिख रही है, लेकिन यह हमें वास्तव में पहले पता नहीं था। उन्होंने पेड़ की कई प्रजातियों का अध्ययन किया जिन्हें मोटे तौर पर शुरुआती प्रजातियों में विभाजित किया जा सकता है, जो एक नए वर्षावन में खुद को स्थापित करते हैं।

देर से आने वाली प्रजातियां, जो धीमी गति से बढ़ती हैं लेकिन काफी बड़ी हो जाती हैं और इस प्रकार लंबी अवधि में बड़ी मात्रा में कार्बन अवशोषित करती है। एक स्पष्ट अंतर यह है कि दो समूहों के पेड़ गर्मी से कैसे निपटते हैं। प्रारंभिक क्रमिक प्रजातियां अपनी पत्तियों में छिद्रों को खोलती हैं, जिसके माध्यम से वे बड़ी मात्रा में पानी को पेड़ के अलग-अलग भागों में भेजते हैं, इस प्रकार उनकी पत्तियां तापमान को कम करने में मदद करती हैं। यह एक एयर कंडीशनिंग प्रणाली के समान लगता है। देर से विकसित होने वाली प्रजातियां अपने छिद्रों को ज्यादा नहीं खोलती हैं और इसलिए उनके लिए ठंडा रहना अधिक कठिन होता है। हालांकि, शुरुआती क्रमिक प्रजातियों के पत्तों के माध्यम से प्रचुर मात्रा में वाष्पोत्सर्जन के लिए भी बहुत अधिक पानी की आवश्यकता होती है। सूखे की अवधि के दौरान, शोधकर्ताओं ने गौर किया कि शुरुआती प्रजातियां गर्मी के प्रति अधिक संवेदनशील हो गईं और उनकी पत्तियां गिर गईं थी। पानी की उनकी कम खपत का मतलब था कि देर से आने वाली प्रजातियां सूखे के प्रति अधिक प्रतिरोधी थीं।

सरसों के प्रमुख कीट और उनकी रोकथाम की सम्पूर्ण जानकारी

भोपाल। भारत में तिलहन कुल की फसलों में सरसों (तोरिया, राई) का महत्वपूर्ण स्थान है। यह फसलें रबी कुल में उगाई जाने वाली मुख्य तिलहनी फसलें हैं। सरसों के उत्पादन में राजस्थान प्रथम स्थान रखता है और उत्तर प्रदेश की भी यह रबी कुल में उगाई जाने वाली मुख्य फसल है। सरसों की फसल में कई प्रकार के कीट लगते हैं और ये आर्थिक हानि पहुंचाते हैं। इसी दृष्टिकोण से इन कीटों की पहचान कर इनकी उचित रोकथाम करना बहुत आवश्यक है। सरसों के मुख्य कीट एवं उनका उचित प्रबंध निम्नलिखित प्रकार से है।

सरसों के मुख्य कीट

माहू- सरसों में लगने वाला यह कीड़ा इस फसल के लिए बहुत ही हानिकारक है, इस कीट को इसके दूसरे नाम चेपा के नाम से भी जाना जाता है। इस कीट के शिशु व प्रौढ़ पौधे के सभी कोमल भाग (तना, पत्ती, फूल तथा नई फलिया) का रस चूसते हैं और उन पर मधु स्राव भी करते है जिससे उन पर कवक का आक्रमण भी बढ़ जाते हैं, जिससे पौधे में प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया में कमी आ जाती है। इस कीट का आक्रमण मुख्यत दिसंबर-जनवरी से लेकर मार्च तक देखने को मिलता है।

नियंत्रण- सरसों की अगेती बुबाई की गई फसल पर इस कीट का प्रकोप कम देखने को मिलता है तथा सामान्यत यह भी देखा गया है की सरसों की तुलना में राई जाति पर इस कीट का आक्रमण भी कम रहता है। दिसंबर या जनवरी में पौधों पर कीड़ों के समूह दिखने पर उन प्रभावित पौधे के हिस्सो को कीट सहित तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। जब फसल के 20 प्रतिशत हिस्से पर कीट का प्रकोप दिखाई दे अथवा जब 13 -14 कीट प्रति पौधा दिखाई दे तब निम्नलिखित कीटनाशकों में से किसी एक का प्रयोग करना चाहिए। इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल की 80 मिली मात्रा प्रति एकड़ 300 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करे। ऑक्सिडिमेटोन मिथाइल (मेटासिस्टोक्स) 25 ईसी की 250 मिली मात्रा 400 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ छिड़काव करना चाहिए।

सरसों में सुरंग बनाने वाला कीट

यह कीट भूरे रंग का होता है तथा इसका आकार 1.5 -20 मिमी होता है व इसकी सुंडियां पीले रंग की होती हैं। इस कीट की सुंडिया पौधे के विभिन्न भागों में टेढ़ी-मेढ़ी सुरंग बनाती हैं तथा पत्तियों में भी सुरंग बनाकर उसके हरे भाग खा जाती है। इससे पौधे की भोजन बनाने की प्रक्रिया पर बुरा प्रभाव पड़ता है, जिससे परिणामस्वरुप फसल की पैदावार कम हो जाती है।

नियंत्रण

कीट ग्रस्त पौधे के भागों को तोड़कर नष्ट कर दें। यह कीट भी माहू के आक्रमण के समय ही दिखाई देता है इसलिए माहू के रोकथाम के लिए प्रयोग की गई कीटनाशकों के इस्तेमाल से ही इसका आक्रमण कम हो जाता है।

आरा मक्खी

इस मक्खी का रंग नारंगी व काला तथा इसके पंख धुएं के रंग के सामान होते है, इसकी कीड़े की सूंडिया गहरा हरे रंग की होती है और इनके ऊपर काले तीन धब्बेनुमा कतारनुमा सरंचना देखने को मिलती है। सूंडी की लम्बाई 1.5-2.0 सेमी तक होती है। समान्यत इस कीट की सूंडिया अक्टूबर-नवंबर में ही फसल की प्रारंभिक अवस्था में पत्तों को काट-काट कर खा जाती है और अधिक आक्रमण होने पर यह तनें को भी खा लेती है।

नियंत्रण

गर्मी के महीने में खेत की गहरी जुताई करके छोड़ देना चाहिए, जिससे अधिक धूप के कारण खेत में पड़ी सूंडिया नष्ट हो जाती है। सूंडियों को पकड़कर नष्ट कर देना चाहिए। मैलाथिऑन 50 ईसी की 200 मिली मात्रा को 200 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ छिड़काव करना चाहिए।

सरसों की बालदार सुंडी

यह सुंडी भूरे रंग का होती है तथा पत्तियों की निचली सतह पर हल्के पीले रंग के अंडे देती है। सुंडी का आकार 3-5 सेमी लम्बा होता है और इनका पूरा शरीर बालों से ढका रहता है तथा शरीर का अगला व पिछला हिस्सा काला होता है। इस कीट का आक्रमण अक्टूबर से दिसंबर तक दिखाई देता है तथा तोरिया की फसल में इसका आक्रमण ज्यादा देखने को मिलता है। इसकी सूंडियां दिन तक समूह में फसल को खाती है और फसल को छलनी कर तथा पौधे की पत्तियों,तनों व फलियों की छाल आदि को खाती रहती हैं, जिससे पैदावार में भारी नुकसान होता है।

नियंत्रण

गर्मियों में फसल की गहरी जुताई करें, जिससे मिट्टी में रहने वाले प्यूपा धूप से नष्ट हो जाए। पौधों की जिन पत्तियों पर कीट के समूह दिखाई दें उन पत्तियों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। मोनोक्रोटोफॉस 250 मिली मात्रा को 250 लीटर पानी में घोलकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

सरसों का चितकबरा कीड़ा

इस कीट का रंग काला होता है। इसके शरीर पर लाल, पीले, नारंगी रंग के धब्बे होते है तथा इसके शिशु कीट हल्के पीले व लाल रंग के होते है। इस कीट के शिशु व प्रौढ़ दोनों पौधे के विभिन्न भागों से रस चूस कर फसल को हानि पहुंचाते हैं और पत्तियों का रंग किनारें से सफेद होने लगता है। इसके शिशु कीट फलियों का रस चूसकर उसके वजन तथा तेल की मात्रा में कमी कर हानि पहुंचाते हैं।

नियंत्रण

फसल में सिंचाई करने से अंडे, शिशु, प्रौढ़ नष्ट हो जाते हैं। सरसों के बीज को 5 ग्राम इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्ल्यू एस प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज उपचार कर बुवाई करना चाहिए। मैलाथिऑन 50 ईसी 400 मिली मात्रा को 400 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव कर देना चाहिए।

लेखक-
पंकज कुमार राजपूत,
ऋषभ मिश्रा, अरुण कुमार
शोध छात्र कीट विज्ञान विभाग
चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर

-देशभर के 1500 स्टार्टअप और 13,500 किसान होंगे शामिल

कृषि-स्टार्टअप किसान सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे प्रधानमंत्री मोदी

भोपाल/नई दिल्ली। जागत गांव हमार

एग्री-स्टार्टअप कॉन्क्लेव और किसान सम्मेलन 17 और 18 अक्टूबर 2022 को नई दिल्ली में आयोजित होने वाला है और इसका उद्घाटन प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी करेंगे। इस मौके पर पीएम मोदी पीएम-किसान किसान कल्याण योजना की 12वीं किस्त भी जारी करेंगे। यह आयोजन बदलता कृषि परिदृश्य और तकनीक विषय पर आधारित है और कृषि-मशीनरी, कृषि-आदान, कृषि प्रौद्योगिकियों में नवाचार और किसानों के लिए विभिन्न किसान अनुकूल प्रथाओं सहित कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि-स्टार्टअप द्वारा निभाई गई भूमिका को प्रदर्शित करेगा। इस आयोजन में लगभग 1500 स्टार्टअप और 13,500 किसान भाग लेंगे। यह कार्यक्रम किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के कृषि विभाग द्वारा कृषि में कृषि उद्यमिता और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किया जा रहा है। दो दिवसीय कार्यक्रम स्टार्टअप्स को हितधारकों के साथ नेटवर्किंग का अवसर प्रदान करेगा, उनके नवाचारों को बाजार में लाने में मदद करेगा और कॉन्क्लेव में निवेशकों से बातचीत करने और फंडिंग प्राप्त करने में मदद करेगा।

समर्थन करने वाली सरकारी योजनाएं

राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (आरकेवीवाई) के तहत नवाचार और कृषि-उद्यमिता कार्यक्रम 2017-18 में कृषि मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे को मजबूत करना है ताकि वित्तीय सहायता प्रदान करके और कृषि उद्यमिता और कृषि व्यवसाय को बढ़ावा दिया जा सके। इस पहल के माध्यम से, पांच नॉलेज पार्टनर के साथ 24 रफ्तार कृषि-व्यवसाय इन्क्यूबेटर (आरएबीआई) स्थापित किए गए थे। कृषि, अनुसंधान और शिक्षा विभाग 2016-17 में शुरू किए गए राष्ट्रीय कृषि नवाचार कोष के माध्यम से स्टार्टअप का समर्थन कर रहा है। इस योजना में अब तक 800 से अधिक स्टार्टअप का समर्थन किया जा चुका है।

किसानों का खर्चा-समय लगेगा कम

ड्रोन देगा फसलों को विकास की 'उड़ान'

नरसिंहपुर। जागत गांव हमार

जिले की प्रमुख फसल गन्ने की फसल में इन दिनों चल रहे कीट व्याधि के प्रकोप पर काबू पाने के लिए किसान प्रयासरत हैं। उनके लिए ड्रोन के माध्यम से किया जाने वाला दवा का छिड़काव बेहद मददगार साबित हो रहा है। इस नई तकनीक से किसानों की दवा छिड़काव की लागत भी कम हो रही है वहीं समय की भी बचत हो रही है। फिलहाल इसे लेकर बड़े रकबे वाले किसान काफी उत्साहित दिखा रहे हैं। यह सुविधा अभी तक नरसिंहपुर जिले में सरकारी स्तर पर शुरू नहीं हो सकी है। कुछ अन्य जिलों में इसे पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर अमल में लाया जा रहा है। जिले के कुछ नवाचारी किसानों ने इसका उपयोग शुरू कर दिया है।

फसल की ऊंचाई बढ़ जाने और उसकी सघनता के साथ गन्ने की फसल में सुअरों का डेरा होने की आशंका के चलते किसानों को दवा का छिड़काव करने में भी काफी परेशानी होती है। इन दिनों स्प्रे पम्प से दवा का छिड़काव करने के लिए मजदूर भी हिचकिचाते हैं। ऐसे में इस कीट व्याधि से गन्ने का उत्पादन प्रभावित हो जाता है।

प्रति एकड़ में 8 से 13 मिनट में स्प्रे

ड्रोन हवा में उड़कर ऊपर से फसलों में स्प्रे करता है। ड्रोन को रिमोट से कंट्रोल किया जाता है। इसको मैनुअल मोड व ऑटोमेटिक मोड में चलाया जाता है। ड्रोन खेत में स्प्रे करने के बाद उसी स्थान पर अपने आप वापस आ जाता है। ड्रोन से स्प्रे करने पर एक एकड़ में दस लीटर दवा व पानी का घोल करीब 8 से 13 मिनट में छिड़काव किया जाता है।

वर्तमान में शासन द्वारा कुछ अन्य जिलों में पायलट प्रोजेक्ट के तौर ड्रोन केवीके को उपलब्ध कराए गए हैं। अभी तक नरसिंहपुर केवीके में यह नहीं आया है। उम्मीद है कि जल्द ही नरसिंहपुर केवीके के लिए भी यह मिल जाएगा, जिससे जिले के किसानों के लिए उपलब्ध कराया जा सकेगा।

आशुतोष शर्मा, कृषि वैज्ञानिक केवीके नरसिंहपुर

ड्रोन का उपयोग उन किसानों के लिए काफी मददगार है जो बड़ा रकबा होने के साथ ही अकेले हैं। उनके पास समय भी कम है। यह एक दिन में काफी बड़े रकबे में दवा का छिड़काव कर सकता है। एक साथ पूरे खेत में दवा का छिड़काव होने से फसल की कीट व्याधि एक बार में ही कंट्रोल हो जाती है। यही काम मजदूर से कराते हैं तो वे एक दिन में अधिक से अधिक 15 बीस एकड़ में ही दवा का छिड़काव कर पाते हैं।

-नीतेश दीक्षित,
गन्ना किसान बरमान

-गेहूं की खेती किसानों को लिए मददगार विकल्प होगी साबित

गेहूं की सबसे नई उन्नत अगेती किस्म, 82 क्विंटल तक पैदावार

भोपाल। जागत गांव हमार

गेहूं एक ऐसी खाद्यान्न फसल है, जो ना सिर्फ भारत बल्कि पूरे विश्व में खाद्य की आपूर्ति करता है। यही वजह है कि भारत को गेहूं का एक बड़ा उत्पादक देश कहा जाता है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध में यह सामने आया है कि जलवायु परिवर्तन से बचने के लिए गेहूं की खेती किसानों को लिए मददगार विकल्प साबित हो सकती है। कई किसान सिंतबर के अंत तक गेहूं की अगेती खेती की तैयारी पर काम शुरू कर ही देते हैं, ताकि इस मौसम में 2 बार एक ही फसल का लाभ उन्हें मिल सके। ऐसे में किसानों के लिए यह जरुरी है कि वह अच्छी गुणवत्ता वाली उन्नत किस्मों का चयन करें, जिससे गेहूं की अधिक पैदावार के साथ उच्च गुणवत्ता वाले फसल भी प्राप्त हों।

24 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार

डब्ल्यूएच 1105 (डब्ल्यूएच 1105): गेहूं के इस किस्म का चयन आप अगेती बुवाई के लिए कर सकते हैं। यह किस्म डब्ल्यूएच 1105 सबसे उन्नत किस्मों में से एक है। किसानों को यह सलाह दी जाती है कि वह इस किस्म की बुवाई के बाद 157 दिनों के अंदर कर 20 से 24 क्विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। गेहूं की इस किस्म का पौधा सिर्फ 97 सेमी लंबाई का होता है। लम्बाई में कम होने के कारण इस किस्म को आंधी और तेज हवा का खतरा नहीं होता और नुकसान का भी खतरा कम रहता है।

प्रमाणित बीज ही खरीदें किसान

अब किसान आराम से गेहूं की खेती तीन चरणों में कर सकते हैं। जी हां, कृषि विशेषज्ञों के मुताबिक, गेहूं की खेती तीन चरणों में की जाती है, जिसे हम अगेती खेती, मध्यम खेती और पछेती खेती कहते हैं। इसकी खेती के चरणों पर बात की जाए, तो गेहूं की खेती का पहला चरण 25 अक्टूबर से 10 नवंबर तक होता है। ऐसे में किसान भाई इस अवधि के दौरान गेहूं के उन्नत किस्मों की बुवाई कर सकते हैं। वहीं, दूसरे चरण की बोवनी किसान 11 नवंबर से 25 नवंबर तक कर सकते हैं और तीसरा चरण 26 नवंबर से 25 दिसंबर तक रहता है। सिंतबर के अंत से शुरू कर 25 अक्टूबर तक गेहूं के अगेती किस्मों की बोवनी कर सकते हैं। ऐसे में किसानों को यही सलाह दी जाती है कि वह बाजार से गेहूं के प्रमाणित बीज ही खरीदें।

मसूर की उन्नत किस्में देती हैं 10 से 11 क्विंटल प्रति एकड़ पैदावार

मसूर की उन्नत किस्में देती हैं 10 से 11 क्विंटल प्रति एकड़ पैदावार

भोपाल। जागत गांव हमार

दाल प्रोटीन और फाइबर से भरपूर होती है। इसमें से एक मसूर है। मसूर दलहनी फसलों की प्रमुख श्रेणी में रखा गया है। बात करें मसूर की खेती की, तो यह आमतौर पर देश के सभी हिस्सों में की जाती है। इसमें मौजूद पोषक त्तव हमारे शरीर के लिए बेहद लाभदायक माने जाते हैं। मसूर की अच्छी पैदावार के लिए जरूरी है कि आपको मसूर की उन्नत किस्मों की जानकारी हो। दाल प्रोटीन और फाइबर से भरपूर होती है। इसमें से एक मसूर है। मसूर दलहनी फसलों की प्रमुख श्रेणी में रखा गया है। बात करें मसूर की खेती की, तो यह आमतौर पर देश के सभी हिस्सों में की जाती है। इसमें मौजूद पोषक त्तव हमारे शरीर के लिए बेहद लाभदायक माने जाते हैं। मसूर की अच्छी पैदावार के लिए जरूरी है कि आपको मसूर की उन्नत किस्मों की जानकारी हो।

मसूर की उन्नत किस्में

बॉम्बे 18: मसूर की यह किस्म बोवनी के 130-140 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। 4-4.8 क्विंटल प्रति एकड़ की औसत उपज देता है।

डीपीएल 15: डीपीएल 15 प्रति एकड़ 5.6-6.4 क्विंटल की औसतन उपज देती है। साथ ही यह किस्म बोवनी के 130-140 दिनों में पक जाती है।

डीपीएल 62: 6-8 क्विंटल प्रति एकड़ की औसत उपज देनी वाली यह खास डीपीएल 62 बोवनी के 130-140 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है।

एलएल-931: एलएल 931 गहरे हरे पत्तों और गुलाबी फूलों के साथ छोटी किस्म है। जो कि बोवनी के 146 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। यह फली छेदक के लिए प्रतिरोधी है। यह 4.8 क्विंटल प्रति एकड़ की औसत उपज देती है।

एल 4632 के 75: 120-125 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। 5.6-6.4 क्विंटल प्रति एकड़ की औसत उपज देती है।

पूसा 4076: 10-11 क्विंटल प्रति एकड़ की औसत बंपर उपज देती है। साथ ही 130-135 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है।

एलएल699: एलएल 699 मसूर की उन्नत किस्मों में से एक है। यह जल्दी पकने वाली, छोटी किस्म गहरे हरे पत्तों वाली होती है। यह किस्म बोवनी के 145 दिनों में कटाई के लिए तैयार हो जाती है। यह फली छेदक के लिए प्रतिरोधी है और जंग और झुलस रोग को सहन कर सकता है। वैज्ञानिकों द्वारा दावा किया जा रहा है कि यह औसतन 5 क्विंटल प्रति एकड़ उपज देता है।

किसान परेशान, समिति से मिलेंगे व्यापारी

भैंसाखेड़ी कृषि मंडी मंडी में धर्मकांटा ही नहीं

भोपाल। जागत गांव हमार

ग्राम भैंसाखेड़ी स्थित पं. दीनदयाल उपाध्याय कृषि उपज मंडी में व्यापारियों के तमाम प्रयास के बावजूद अभी तक धर्मकांटा नहीं लग सका है। किसानों को छोटे इलेक्ट्रानिक कांटे पर ही फसल तुलवानी पड़ रही है। अनाज व्यापारी संघ धर्मकांटा लगाने की मांग को लेकर मंडी समिति से मुलाकात करेगा। मंडी में अपेक्षित कारोबार एवं नीलामी नहीं होने के कारण अधिकांश व्यापारियों ने गोदाम बंद कर दिए हैं। किसानों की रुचि भी कम हो गई है। व्यापारी संघ की मंडी समिति के साथ पिछले दिनों हुई बैठक में व्यापारियों ने साफ कहा कि मंडी में किसानों और व्यापारियों के लिए जरूरी सुविधाएं जुटाई जाएं तो मंडी में कारोबार बढ़ सकता है।

विश्राम गृह भी अधूरा

बैठक के बाद किसान विश्रामगृह का निर्माण एवं धर्मकांटा स्थापित करने का निर्णय लिया गया। विश्रामगृह का निर्माण शुरू किया गया लेकिन काम अधूरा रह गया। धर्मकांटा अभी तक नहीं लग सका है। अनाज व्यापारी संघ के अध्यक्ष जगदीश आसवानी का कहना है कि इस माह के अंत तक सोयाबीन व मक्का की फसल मंडी में आना शुरू हो जाएगी। हम नीलामी में भाग लेंगे लेकिन मंडी समिति को भी मंडी में सुविधाएं बढ़ाना चाहिए।

मंडी में खाली जगह का उपयोग नहीं

बैरागढ़ के निकटवर्ती ग्राम फंदा, खजूरी, ईंटखेड़ी आदि ग्रामों के किसान फसल बेचने अन्य मंडियों में आने लगी हैं, इस कारण भैंसाखड़ी मंडी का पूरा उपयोग नहीं हो पा रहा है। मंडी में काफी जगह खाली पड़ी है। यदि किसानों को प्रोत्साहित किया जाए तो यहां नए गोदाम भी खुल सकते हैं। वर्तमान में बरसों पहले बने गोदाम ही खाली पड़े हैं।

औषधीय पौधों की खेती के लिए किया जा रहा प्रोत्साहित

भोपाल। अमरकंटक परिक्षेत्र के जनजातीय किसानों को औषधीय पौधों की खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। किसानों को तकनीकी परामर्श, सहयोग, प्रशिक्षण और मार्केट लिंकेज के लिए अनूपपुर जिला प्रशासन ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय ट्रायबल विश्वविद्यालय एवं अन्य राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ एमओयू साइन किए हैं। जिला प्रशासन ने आयुष विभाग के सहयोग से 200 किसानों को औषधीय पौधों की खेती के लिए प्रशिक्षण दिलाया है। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय कंपनी द्वारा क्षेत्र में औषधीय उत्पाद खरीदने के लिए अनुबंध भी किया गया है। वन विभाग द्वारा 60 हेक्टेयर पर औषधीय प्रजाति के 5 हजार पौधों का रोपण किया गया है। सर्वेक्षण में अमरकंटक क्षेत्र लेमन ग्रास, पामा रोजा और स्टीविया औषधीय पौधों की पैदावार के लिये अनुकूल पाया गया है।

एक सप्ताह से बीमारी की चपेट में कोई नया जिला नहीं आया

मप्र को लंपीरोधी टीका की 14 लाख डोज और मिली

भोपाल। जागत गांव हमार

पशुओं में फैली लंपी स्किन डिसीज (एलएसडी) से बचाव के लिए टीका की 14 लाख डोज और मिल गई है। 10 लाख डोज पहले से उपलब्ध थी। इस तरह अब 24 लाख डोज भंडार में है। प्रदेश में एक करोड़ 80 लाख गोवंशी पशु हैं। लंपी से बचाव के लिए इनमें कम से कम 20 प्रतिशत यानी 36 लाख को टीका लगाना जरूरी है, लेकिन अभी तक 10 लाख को ही टीका लग पाया है। हर दिन करीब 30 हजार का टीकाकरण किया जा रहा है। यह अच्छी बात है कि पिछले एक सप्ताह से इस बीमारी की चपेट में कोई नया जिला नहीं आया है। सबसे आखिर में बालाघाट में लंपी के मामले सामने आए थे। अब तक संक्रमित मवेशियों की संख्या करीब साढ़े 15 हजार है। इनमें 13 हजार स्वस्थ हो चुके हैं। उमस कम होने से संक्रमण के फैलाव में कमी आई है। पशु चिकित्सा विभाग के अधिकारियों ने बताया कि पांच रुपए में टीका की एक डोज पड़ती है। इसके लिए राशि भारत सरकार से मिलती है, पर कंपनियों से खरीदी की जिम्मेदारी राज्यों को दी गई है। बचाव के लिए गोटपाक्स का टीका लगाया जाता है, जो सिर्फ दो कंपनियां बनाती हैं, इसलिए पहले जरूरत के अनुसार टीका नहीं मिल पा रहा था।

अक्टूबर में पहली बार 12 घंटे में 71 मिमी बारिश,श्योपुर में अब तक नहीं हुई इतनी बारिश

पक कर तैयार किसानों की फसल अब खेत में ही सड़ने लगी

अक्टूबर में बारिश ने तोड़ा कई सालों का रिकॉर्ड, फसलों को भारी नुकसान

श्योपुर। जागत गांव हमार

अक्टूबर माह में शुक्रवार की रात को हुई 71 मिमी बारिश ने कई सालों का रिकॉर्ड को तोड़ दिया है। क्योंकि इतनी बारिश श्योपुर जिले में पहले कभी नहीं हुई है। इस बारिश से जहां नदी नालों का जल स्तर बढ़ गया है। वहीं खेतों में खड़ी फसलों को भी नुकसान पहुंचा है। जिससे किसानों के माथे पर चिंता की लकीरे दिखने लग गई हैं।

अधीक्षक भू अभिलेख कार्यालय से मिली जानकारी के मुताबिक शुक्रवार की शाम 8 बजे से शनिवार की सुबह 8 बजे तक जिले में 71 मिमी औसत बारिश हुई है। जिसे मिलाकर अक्टूबर माह में इस साल 75.8 मिमी बारिश हो गई है। जो कि अब तक की रिकॉर्ड बारिश है। शनिवार को भी दिन में रुककर बारिश का दौर जारी रहा और आगे भी कुछ दिन बारिश का दौर रहने की संभावना है। मौसम के जानकार बता रहे हैं कि ट्रफ लाइन बंगाल की खाड़ी से गुजरात की ओर जा रही है। इसके अलावा एक ट्रफ लाइन ओर सक्रिय है। दोनों तरफ से नमी आ रही है। इसलिए बारिश का क्रम चलता रहेगा। मानसून देरी से विदा होने के कारण ऐसा हो रहा है। 15 अक्टूबर के बाद मानसून की विदाई होगी। उधर इस बारिश से खेतों में खडी और खलियान में कटी पड़ी सोयाबीन, बाजरा, तिल्ली, ज्वार आदि फसलों में सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचा है। धान की फसल में भी इस बारिश से नुकसान हुआ है। ऐसे में मौसम की मार से परेशान बने जिले के किसानों की परेशानियां एक बार फिर बढ़ गई हैं।

अब तक हुई 1117 मिमी बारिश

जिले में अब तक 1117.3 मिमी कुल औसत बारिश हो गई है। जबकि गत वर्ष 8 अक्टूबर तक इस अवधि में 1339.7 मिमी बारिश हुई थी। बताया गया है कि इस साल सबसे ज्यादा 1370 मिमी बारिश जिले की कराहल तहसील में हुई है। जबकि श्योपुर तहसील में 1303 मिमी बारिश,बडौदा में 1117 मिमी,विजयपुर में 972 मिमी और वीरपुर तहसील में 823 मिमी बारिश हुई है।

अक्टूबर माह में हुई बारिश एक नजर में

वर्ष	बारिश	वर्ष	बारिश
2009	33.01 मिमी	2016	25.07 मिमी
2010	00	2017	00
2011	00	2018	2 मिमी
2012	00	2019	33.01 मिमी
2013	24.09 मिमी	2020	00
2014	1.02 मिमी	2021	8 मिमी
2015	00	2022	75.8 मिमी

कितने चीतों को छोड़ा जाएगा, विशेषज्ञ करेंगे इसका निर्णय

खानपान और सुरक्षा सहित अन्य बिंदुओं पर नजर

17 को पूरी होगी क्वारंटीन अवधि 18 को बड़े बाड़े में छोड़े जाएंगे चीते

श्योपुर । जागत गांव हमार

कूनो नेशनल पार्क में नामीबिया से लाए गए आठ चीतों की क्वारंटीन अवधि 17 अक्टूबर को पूरी होने जा रही है। इस अवधि के पूरी होने के बाद चीतों को 18 अक्टूबर को छोटे बाड़े से बड़े बाड़े में छोड़ा जाएगा, लेकिन कितने चीतों को बड़े बाड़े में छोड़ा जाएगा और कितने चीतों को अभी कुछ दिन रोका जाएगा। इसका निर्णय विशेषज्ञ चीतों का परीक्षण करने के उपरांत करेंगे। यहां बता दें कि कूनो नेशनल पार्क में गत 17 सितंबर को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नामीबिया से लाए गए 8 चीतो को कूनो में प्रवेश कराया था। वर्तमान में ये चीते बड़े बाड़े में बनाए गए छोटे-छोटे बाड़ों में क्वारंटीन रखा गया है। क्वारंटीन इसलिए रखा गया, ताकि इनमें किसी तरह की कोई बीमारी न हो। क्वारंटीन अवधि के दौरान चीतों को भैंसे का मास दिया जा रहा है। चीतों के खानपान और सुरक्षा सहित अन्य बिंदुओं को लेकर विशेषज्ञों की टीम बराबर नजर रख रही है। ये चीते एक माह के लिए क्वारंटीन किए गए है। बताया गया है कि चीतों की क्वारंटीन अवधि 17 अक्टूबर को पूरी हो रही है, इसके बाद इन्हें 18 को छोटे बाड़े से बड़े बाड़े में छोडा जाएगा।

विशेषज्ञ करेंगे निर्णय

कूनो में विशेषज्ञों की टीम चीतों पर बराबर नजर रख रही है। जिसमें भारत और नामीबिया के विशेषज्ञ भी शामिल हैं। विशेषज्ञों की टीम 16 अक्टूबर को चीतों का परीक्षण करेगी और यह देखेगी कि चीतों का स्वभाव कैसा है, वे कितने स्वस्थ्य है। परीक्षण के दौरान जो चीते पूरी तरह फीट पाए जाएंगे, उन्हें 18 अक्टूबर को छोटे बाड़े से बड़े बाड़े में छोडा जाएगा। शेष चीतों को कुछ दिन के बाद बड़े बाड़े में छोड़ा जाएगा। बडे बाड़े में जो चीते छोड़े जाएंगे, जहां वे खुद ही अपना शिकार करेंगे, चीतों के शिकार के लिए बड़े बाड़े में कूनो पार्क प्रबंधन ने चीतल छोड़ रखे हैं।

16 से खुलेंगे कूनो के तीन गेट, सैलानियों को मिलेगा प्रवेश

कूनो नेशनल पार्क के दरवाजे सैलानियों के लिए 16 अक्टूबर से खुल जाएंगे। इस दौरान कूनों के तीन गेटों को सैलानियों को कूनो में प्रवेश दिया जाएगा, लेकिन अभी उन्हें चीतों का दीदार नहीं होगा। जबकि सैलानियों को चीतों के दीदार का बड़ी बेसब्री से इंतजार बना हुआ है। मगर सुरक्षा की दृष्टि से अभी चीतों की तरफ किसी को जाने की अनुमति नहीं है। डीएफओ पीके वर्मा ने बताया कि 16 अक्टूबर से कूनों के तीन गेटों से सैलानियों को प्रवेश मिलेगा, उन्हें अपने निजी वाहनों से कूनो का नजारा देखने की अनुमति रहेगी, इसके लिए उन्हें निर्धारित शुल्क अदा करना होगा। अभी पालपुर क्षेत्र का एरिया प्रतिबंध रहेगा। लेकिन कूनो के शेष क्षेत्र में सैलानियों को आने जाने की छूट रहेगी।

सांची को 3.50 के बजाय रोजाना मिल रहा सिर्फ 2.75 लाख लीटर दूध

महंगे चारे और लम्पी ने घटाया दूध का उत्पादन

इदौर में डिमांड अधिक होने पर उज्जैन से रोज लेना पड़ रहा दूध

इंदौर। जागत गांव हमार

तीन साल से पशु आहार की लगातार बढ़ती कीमतें और पिछले कुछ दिनों से लम्पी वायरस के असर के कारण इंदौर संभाग में दूध उत्पादन तेजी से घटा है। इंदौर सहकारी दुग्ध संघ (सांची) को कुछ महीने पहले तक मिलने वाला प्रतिदिन 3.50 लाख लीटर दूध घटकर फिलहाल करीब 2.75 लाख लीटर रह गया है। बढ़ती महंगाई के चलते किसानों ने पशुओं की संख्या कम कर दी है। डिमांड के अनुसार दूध नहीं होने पर कई बार सांची को उज्जैन सहित अन्य जिलों के उत्पादकों से दूध लेना पड़ता है। 2020 के बाद अब तक पशु आहार की कीमतों में 30 से 35 फीसदी तक इजाफा हो गया था। सांची ने अगस्त में दूध खरीदी की दरों में बढ़ोतरी भी की है, बावजूद उत्पादन में कोई खास बढ़ोतरी नहीं हुई। सांची में हर दिन फिलहाल 2.75 लाख लीटर दूध आ रहा है, इससे चार गुना अधिक करीब 12 लाख लीटर दूध का उत्पादन इंदौर संभाग में होता है। बाकी दूध खुली बंदी व दुकानों से बेचा जाता है।

गाय-भैंस की कीमतें बढ़ीं

तीन साल में पशुओं (गाय और भैंसों) की कीमतों में भी इजाफा हुआ है। 40-50 हजार में मिलने वाली भैंसों की कीमत 70 से 80 हजार तक पहुंच गई है। गाय भी 30-35 हजार से बढ़कर 50-55 हजार तक पहुंच गई है।

नहीं बढ़ा उत्पादन

अगस्त में सांची ने किसानों से दूध खरीदी का दाम 7.20 रुपए प्रति फैट से बढ़ाकर 7.70 रुपए कर दिया था। उसके बाद भी उत्पादन में खास फर्क नहीं पड़ा है। कोरोना के दौरान तो आवक 4 लाख लीटर प्रतिदिन तक पहुंच गई थी, लेकिन अब 2.75 लाख लीटर हो गई है।

पशु आहार की बढ़ी कीमतें

उत्पादन	अक्टूबर 2022	जनवरी 2020
भूसा	1200	850 (100 किलो)
खली	2500	1800 (70 किलो)
चना चूरी	2400	1900 (100 किलो)
उदड़ चूरी	1500	1100 (70 किलो)
चापड़	1200	900 (50 किलो)

(नोट-राशि रुपए में, दाम पशु आहार विक्रेता के अनुसार)

दूध उत्पादन 20 फीसदी गिरा

इंदौर दुग्ध संघ के अध्यक्ष मोती सिंह पटेल ने बताया, पिछले कुछ महीनों में करीब 20 फीसदी उत्पादन गिरा है। साल की शुरुआत में करीब 3.50 लाख लीटर दूध रोज आता था, अब 2.75 लाख लीटर आता है। डिमांड 2.80 से 3 लाख लीटर तक होती है। कई बार उज्जैन सहित अन्य जिलों से दूध लेते हैं। पशु आहार की कीमतों में 30 से 40 फीसदी तक की ब ?ेतरी से उत्पादन गिरा है। डेढ़ महीने से लम्पी वायरस का भी असर है।

-पशुपालकों के लिए खुशखबरी

किसानों को आत्मनिर्भर बनाने केंद्र सरकार हर ग्राम पंचायत में खोलेगी डेयरी

भोपाल। जागत गांव हमार

पशुपालन ग्रामीण क्षेत्रों के लिए एक लोकप्रिय व्यवसाय के रूप में उभर कर सामने आया है। किसानों की आय में इजाफा करने में इस क्षेत्र का योगदान बेहद अहम साबित हो रहा है। यही वजह है कि सरकार किसानों को डेयरी व्यवसाय की तरफ रुख करने के लिए लगातार प्रोत्साहित कर रही है। किसानों को डेयरी खोलने के लिए सरकार आर्थिक सहायता भी देती है। अब केंद्र सरकार देश की हर पंचायत में डेयरी खोलने की योजना बना रही है।

समृद्धि का साधन बनेगी डेयरी- सिक्किम में एक कार्यक्रम के दौरान गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि डेयरी को किसान की समृद्धि का साधन बनाया जा सकता है। इसकी व्यवस्था कोआपरेटिव होनी चाहिए। इससे किसानों के बीच से गरीबी को हटाया जा सकता है। इसीलिए केंद्र सरकार ने अगले 5 सालों में देश की हर पंचायत में डेयरी बनाने का फैसला लिया है।

मुनाफा किसानों को दिया जाएगा

अमित शाह ने आगे कहा कि 70 फीसदी दूध असंगठित तरीके से मार्केट में जाता है। ये हमारी मजबूरी है। हमें अपनी सहकारिता इतना मजबूत करनी है ताकि विदेशी कंपनियां यहां आ न सकें। दुग्ध उत्पादन में नार्थ ईस्ट की हिस्सेदारी अभी 12 फीसदी है। इसको बढ़ाकर हमें 20 फीसदी तक पहुंचाना है। विश्व में भारत के डेयरी उत्पादों के एक्सपोर्ट पर होने वाले मुनाफे का हिस्सा किसानों को भी दिया जाएगा।

नाबार्ड देता है सब्सिडी

नाबार्ड डेयरी फार्म खोलने को इच्छुक किसानों को 25 प्रतिशत तक की सब्सिडी देता है। वहीं एसटी/एससी किसानों को इसी काम के लिए 33.33 प्रतिशत तक की सब्सिडी दी जाती है। नाबार्ड की इस योजना के किसान, व्यक्तिगत उद्यमी, गैर सरकारी संगठन, कंपनियां आवेदन कर सकती हैं। सरकार के नियमों के मुताबिक इस योजना का लाभ एक ही परिवार से एक से अधिक व्यक्ति उठा सकते हैं। हालांकि शर्त ये है अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग बुनियादी ढांचे के साथ अलग-अलग इकाइयां स्थापित करेंगे। इस योजना के बारे में अधिक जानकारी के लिए पशुपालक स्टार्टअप इंडिया और नाबार्ड की अधिकारिक वेबसाइट पर विजिट कर सकते हैं।

-कृषि विभाग नेफेड के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

पोषक अनाजों की वापसी में जुटी सरकार

भोपाल/नई दिल्ली। जागत गांव हमार

इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स (आईवाईओएम)-2023 के उत्सव के लिए मोटे अनाजों को प्रोत्साहन देने की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की परिकल्पना वाली पहल को बढ़ावा देने के निमित्त नई दिल्ली में कृषि और किसान कल्याण विभाग तथा भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ लिमिटेड (नेफेड) के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। सरकार द्वारा संयुक्त राष्ट्र को प्रस्तावित इस इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स (आईवाईओएम)-2023 की पहल को ध्यान में रखते हुए, दोनों संगठन मिलेट्स (मोटे अनाज) आधारित उत्पादों के प्रचार और विपणन के लिए मिलकर काम करेंगे। आईवाईओएम-2023 पूरे विश्व में मनाया जाएगा। भारत विश्व मानचित्र पर पोषक अनाजों को वापस लाने के लिए कमर कस रहा है। ये संगठन पूरे देश में अधिकतम मूल्य निर्माण और मोटे अनाज आधारित उत्पादों के लिए समर्थन, संगठित प्रचार, बाजार और प्रभावी बाजार संबंध स्थापित करेंगे। कृषि और किसान कल्याण विभाग और नेफेड कुछ प्रमुख क्षेत्रों जैसे मूल्यसंवर्धित मोटे अनाज आधारित उत्पादों के निर्माताओं/प्रोसेसरों को परामर्श सहायता उपलब्ध कराना, इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ मिलेट्स रिसर्च (आईआईएमआर) के पैनल में शामिल स्टार्ट-अप्स सहित अन्य स्टार्ट-अप्स की ऑन-बोर्डिंग, विशेष रूप से मोटे अनाज आधारित उत्पादों की एक श्रृंखला विकसित करने के लिए एफपीओ का गठन, नेफेड बाजार भंडारण और नेफेड से जुड़े अन्य संस्थानों के साथ-साथ दिल्ली और एनसीआर के विभिन्न स्थानों पर मोटे अनाज आधारित वेंडिंग मशीनों की स्थापना के माध्यम से मोटे अनाज आधारित उत्पादों को बढ़ावा देना, विपणन करना तथा मोटे अनाज आधारित वस्तुओं पर ध्यान केंद्रित करने में सहयोग और सहायता प्रदान करेंगे।

जागत गांव हमार के सुधि पाठकों...

» जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।

» समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।

» ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 94250485889

"आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, स्थानीय संपादक- **अरविंद मिश्र, संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)